रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

√रुच् तथा √रुच् के अर्थवाली धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला संप्रदान कहलाता है, उसमें चतुर्थी होती है,

यथा- शिशवे क्रीडनकं रोचते (बच्चे को खिलौना अच्छा लगता है)।

गीतायै रामायणपठनं रोचते (गीता को रामायण का पाठ अच्छा लगता है)।

कथन अर्थवाली √कथ् , √शंस् , √चक्ष् , √ख्या धातुओं के अकथित कारक तथा निपूर्वक प्रेरणार्थक (√निवेद्) धातु के प्रकृत दशा के कर्ता का कर्म में प्रयोग न होकर संप्रदान में प्रयोग होता है,

यथा—यस्मै ब्रह्मपारायणं जगौ (जिसे वेद पढ़ाया)।

आर्ये कथयामि ते भूतार्थम् (देवि, तुमसे सत्य कहता हूँ)।

एतत् गुरवे निवेदयामहे (यह गुरुजी से निवेदन कर दें)।

भेजना अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिस व्यक्ति के पास कोई भेजा जाता है वह चतुर्थी में तथा जिस स्थान पर भेजा जाता है, वह द्वितीया में रखा जाता है,

यथा--भोजेन दूतो रघवे विसृष्टः (भोज ने रघु के पास दूत भेजा)।

धारेरुत्तमर्णः

णिजन्त धृञ् (धारि) (कर्ज लेना या उधार लेना) धातु के अर्थ में धनक (कर्ज देने वाले) की सम्प्रदान संज्ञा होती है और उससे चतुर्थी होती है,

यथा - सोमः देवानन्दाय शतं धारयति (सोम ने देवानन्द से सौ रुपये ऋण लिये है)।

गोपालः मह्यम् सहस्रं धारयति (गोपाल ने मुझसे एक हजार कर्ज लिया है।

स्पृहेरीप्सितः

√स्पृह् (चाहना) धातु के योग में जिसे चाहा जाय वह संप्रदान संज्ञक होता है और उसमें चतुर्थी होती है,

यथा - युवती शिशवे स्पृहयति (युवती बच्चे की चाह करती है)।

√स्पृह् से बने हुए शब्दों के साथ भी कभी-कभी सम्प्रदान देखा गया है,

यथा - भोगेभ्यः स्पृहयालवः (भोगों के इच्छुक),

किन्तु प्रायः सप्तमी होती है –

स्पृहावती वस्तुषु केषु मागधी (मागधी किन वस्तुओं की इच्छा रखती है)।

अन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु

जब अनादर दिखाया जाय तब √मन् (समझना) धातु के कर्म में, यदि वह प्राणी न हो, तो विकल्प से चतुर्थी भी होती है,

यथा-धनवन्तं तृणं तुणाय वा मन्ये। (धनी को तृणवत् समझता हूँ)।

राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः

शुभाशुभ अर्थ में √राध् और √ईक्ष् धातुओं के प्रयोग में जिनके विषय में प्रश्न किया जाता है उनकी सम्प्रदान संज्ञा होती है,

यथा-कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा भरतः।